

II-84

धर्मरत्न वचनामृतं पुस्तकं श्री महाविद्यार

यज्ञा

१३ नमो रगवते यज्ञाय नमिनाये ॥ च वं मया धृतं म कस्मिन् समये रगवान्ना ऊ गृह्ण विदुर्नति स्म ॥ गृध क
ठयवत्तं मरुगारि कृ सध्वनसा दुं मरुगा वाधिसत्त्वमं धनसा दुं न नवल्यूनः समये रगवान्ना गमी नावला सनाय
धर्मयथा यमा धिसमायेनः न नवल्यूनः समये आया वला किं न श्वन वाधिसत्त्वमरुमला गमी नाया यज्ञाय नमिनाये
यां च यथा मव वा वला कयति स्मः ॥ य ऊ स्रुच्य स्रुवा व शुन्या न वा वला कयति स्मः ॥ अथायूष्मान् शानियूग वृद्धा नूला वन
या वला किं न श्वन वाधिसत्त्वमरु सत्त्वमन द वा च न ॥ यः कश्चित्कूलयूगा वा कूलदहिना वा अस्या गमी नायां यज्ञ
यानमिनायां च यथा च जिगु कामन ॥ न न कथं जिह्मि न यं ॥ च व मूक आया वला किं न श्वन वाधिसत्त्वमरु सत्त्व आयूष्म

नं शानियूगमनदवाचनयः कश्चित्कुलयूगवाकूलदूहितावाञ्छां गभीरायां यज्ञायानमितायां चर्याचनितुकामा
 स्तनेवं वावलाकयीगवां॥ ये चैस्त्वस्वरावशून्यान्वावलाकयिगेवां॥ नृयं शून्यं शून्यं ते वनृयं ननृयात्युथक शून्यगाः
 नशून्यगायायुथकनृयं॥ वेदना शून्यं ते वेदना नवेदनायायुथक शून्यगान शून्यगायायुथक वेदना॥ सस्का ना शून्य
 यगा शून्यं ते वसस्का नं नसस्का नात्युथक शून्यगान शून्यगायायुथक सस्का नं॥ विज्ञानं शून्यं शून्यं ते वविज्ञान नविज्ञान
 नात्युथक शून्यगान शून्यगायाः युथक विज्ञानं॥ संज्ञा शून्या शून्यं ते वसंज्ञान संज्ञायायुथक शून्यगान शून्यगायायु
 थक संज्ञा॥ २ नवं रदन शानियूगसर्वधर्मस्वरावन शून्या॥ अलकना नृत्यनृदलिनृचामना विमलानृक्षसंयुक्तुगमा

यज्ञ

रुद्रिष्ठात्रियूगं शून्यगाया न नृयं न व द नानु सं हानु स हानु न वि हानु न न च कृ नु हानु न न द्या न न जि हानु न का या न न म नान न
य न श वृ न ग हानु न न सान स हानु न ध म न न च कृ धा नु न न य धा नु न च कृ वि हानु न धा नु न हानु न वि हानु न धा नु न द्या न वि हानु
न धा नु न जि हानु न धा नु न का य वि हानु न धा नु न म नान वि हानु न धा नु न वि द्या कृ या न स हानु न कृ या न वि हानु न कृ या न न
य कृ या न स हानु न दृ यं न स म द या न नि ना हानु न माना न मा ग न नृ यं न हानु न न या पि ना या पि ॥ न मा रुद्रिष्ठात्रियूगं अ ह म यि
वान वा धि स त्व म हा स त्व यज्ञा या न मि ना मा श्रि य वि ह न कि वि हान न म न मा ग त्वान ॥ अनू ह न गा वि ष या शं ति को ना नि षा नि
वो न यो फा ॥ सर्व वृद्धे न यि यज्ञा या न मि ना मा श्रु या नू ह ना या सं म कृ वा धि न रि सं वे द्या ॥ न मा रुद्रिष्ठात्रियूगं कृ ग य ॥ यज्ञ

यज्ञ

या न मि ना म नुः अनू ह ना म नु अनू य मा म नुः अस म स मा म नुः सर्व दृ य य ज म ना म नुः स मा कृ मि थ्या त्व गृ य ह्या या न मि ना
य कृ मं ग ॥ न य था ॥ उं ग न ग न या नं ग न या न सं ग न वा धि स हान ॥ न वं शान्त्रियूगं ग मी ना या यज्ञा या न मि ना यां जि हान वं वा
धि स त्वे न म हा स त्वे न ॥ अथ व ल र ग वा न न मा रुद्रि सु मा ह्या वृ ह्वा या यो व ला कि न श्व ना य वा धि स त्वाय म हा स त्वाय सा धू का
न म दा ग ना सा धू सा धू कृ ल यूग न व म न कृ मी ना यां यज्ञा या न मि ना यां व रू यं य था त्व या नि दृ षं ग द नू मा यं सर्वे न था ग ने न रू
रिः स मा कृ वृद्धे न नू मा दि नाः आ श्रु नाः ॥ न द म वा य न र ग वा ना स ना य श्रान शान्त्रियूगं यो व ला कि न श्व न वा धि स
त्वे म हा स त्वे सा व स र्व व मि य र्व द व मा नू षा स न गं च र्व श ला को र ग व ना ला वि न म त्या न द न मि ॥ ॐ ॥ ति श्री आ र्यो यज्ञा या न

मि ना या रुद्र य स मा कः ॥

मातृत्वं मातृत्वं त्वत्वासान्नमाचन्द्रावयलरुलिमा। रुतर्हमिस्वाहा॥ सस्त्रमुममसर्वसत्त्वानां सर्वदिग्विदिग्माः स्वाहा
 निरुतानि सर्वयायानि स्वाहा॥ गतायन्माचन्द्रावयलरुलिमा। रुतर्हमिस्वाहा॥ सस्त्रमुममसर्वसत्त्वानां सर्वदिग्विदिग्माः स्वाहा
 कवाणकस्रजाञ्वावग्याञ्जलीकृताः सहस्रसूर्ययश्चातः पूर्णचन्द्रयशस्वनः। सदवमान्बलाकसहस्रसूर्ययश्चातः पूर्णचन्द्रयशस्वनः। सः
 यिंत्वा सूर्ययश्चातः पूर्णचन्द्रयशस्वनः। सदवमान्बलाकसहस्रसूर्ययश्चातः पूर्णचन्द्रयशस्वनः। सः
 दवमान्बलाकसहस्रसूर्ययश्चातः पूर्णचन्द्रयशस्वनः। सः